

## क्या सही क्या गलत ?

- श्री चन्द्र प्रकाश कुमार  
वैज्ञानिक “ई 1”

क्या गलत है आपके मित्र के साथ, आपके सहयोगी के साथ, आपके वरिष्ठ पदाधिकारी के साथ, आपके संबंधों में ? ऐसे विचार बहुधा हम सब के अंतःकरण में विद्यमान रहते हैं। क्या गलत है यह देखना विशेषतः बहुत सरल होता है। हम हमेशा यह व्याख्या करने में निपुण रहते हैं कि हमारे मित्रों, संबंधियों, शिक्षकों, पदाधिकारियों, सरकार आदि में क्या-क्या गलत है। जब हम सिर्फ यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि क्या गलत है, हम वस्तुतः अपने जीवन को एक बहुत महीन लेंस से उन सब जगहों पर देखते हैं जहाँ हमारी आशायें पूर्ण नहीं हुईं, जहाँ दूसरे लोग हमारी आवश्यकताओं की प्रतिपूर्ति में असफल रहें, और जहाँ ये जगतवासी उस तरह नहीं देखते, सोचते या करते हैं जैसा कि हम समझते हैं कि होना चाहिए था। जब हम यह देखने का प्रयत्न करते हैं कि क्या गलत है, तब हमारी आँखें सिर्फ दूसरों के अवगुण, उनकी कमज़ोरियाँ या उनकी अयोगतायें ही देख पाती हैं।

जिस क्षण हम कुछ गलत पाते हैं, तत्काल ही दूसरे व्यक्ति या स्थिति पर आरोप लगाना प्रारम्भ कर देते हैं। कमियाँ तलाश करना बहुत आसान है। दूसरे का दोष निकालना एक आलसी मनुष्य की आदत है। मैंने शायद ऐसा सैकड़ों बार किया होगा। वास्तविकता का उत्तरदायित्व स्वयं लेने की अपेक्षा, दूसरों पर आरोप लगाये होंगे। मैं शायद अपने सहयोगियों एवं अधिकारियों की आलोचना करने का भी दोषी रहा हूँ। हम अक्सर अपने खराब मूँड या बूरे स्वभाव के लिए दूसरों के गलत कार्यों को दोष देते हैं। दूसरों की गलतियाँ निकाल कर हम प्रतिकूल परिस्थितियों में अपने उत्तरदायित्व से भागने का प्रयत्न करते हैं। इसके परिणामस्वरूप हम अपने जीवन की पूर्णता, जो अभी विद्यमान है, नहीं देख पाते।

“क्या मैं वह सब देख रहा हूँ जो ठीक है या मैं सिर्फ गलत देखने का प्रयास कर रहा हूँ” - यह प्रश्न हमें निराशा के क्षण से प्रसन्नता के क्षण में परिवर्तित कर सकता है। यह हमारे अल्प ज्ञान के लेन्स को एक पल में पुनः केन्द्रित कर सकता है। अनायास ही हमें प्रत्येक व्यक्ति या अवस्था में अच्छाई दिखाई देने लगती है। अच्छाई देखने का प्रयास हमें प्रशंसा की उस अवस्था में ले जाता है जहाँ पूर्व के तुच्छ अनुभव भी हमें प्रसन्नता प्रदान करते हैं। हमारे मूँड में बदलाव आता है और हम

अपने चारों तरफ एक पूर्णता का अनुभव करने लगते हैं। तब हम अपना बहुमूल्य समय एवं शक्ति दूसरों की निन्दा में व्यर्थ नहीं करते। जो ठीक हैं, जो प्रशंसा के योग्य हैं, और हम जिनके कृतज्ञ हैं। ऐसा करने से प्रेम एवं घनिष्ठता के नये आयाम हमारे सम्मुख उपस्थित रहते हैं।

यदि हम अपने जीवन को वास्तविकता में सन्तोषप्रद बनाने के लिए उद्यत हैं तो यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है जो हम अपने आपसे पूछ सकते हैं। एक पल के लिये विचार कीजियें कि क्या होगा यदि हम अपना लेन्स बदल लें, जिसके द्वारा हम अपने चारों ओर देखते हैं। हमारे जीवन में कितना बदलाव आयेगा यदि हम अपने सहयोगियों को दैवीय शक्ति का अवतार मानें, जो हमें आवश्यक बुद्धि, विवेक एवं ज्ञान प्रदान करने आई है। क्या होगा यदि हम अपने सहकर्मियों एवं पड़ोसियों के विचारों को इस तरह ग्रहण करें मानो कि वह संसार के सबसे बुद्धिमान मनुष्य हैं? क्या होगा यदि हम अपने पति/पत्नी को इस तरह समझें मानो कि उसका उद्देश्य सिर्फ हमें परम सुख एवं आनन्द प्रदान करना है? हमें क्या सुनाई देगा? हमें क्या दिखाई देगा? हम अपने वर्तमान संबंधों से कितनी नई प्रसन्नता प्राप्त होगी?

एक अच्छे डिनर से हम 10 किलो अपना भार नहीं बढ़ा सकते, एक मुक्तहस्त खरीदारा से लाखों रुपये के कर्जदार नहीं हो सकते, इसी प्रकार हमारे आपसी संबंध एक उत्तेजित विवाद से नहीं टूट सकते। हम आज अपने जीवन में जिस जगह हैं उसका कारण हमारे द्वारा दिन-प्रतिदिन में लिए जाने वाले अच्छे-बुरे निर्णय हैं।

क्या सही है यह देखना एक जीवन-प्रवर्द्धन चुनाव है, ऐसा चुनाव जो निश्चय ही हमें शान्ति एवं संतोष प्रदान करेगा।